विकासखण्ड ताड़ीखेत के ग्रामों से पलायन एवं पलायन के कारण पर एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

पूनम रावत,

शोध छात्रा, समाजशास्त्र विभाग, कुमाँऊ विश्वविद्यालय, नैनीताल, उत्तराखण्ड

शोध सारांश

आदि काल से ही मानव भोजन, सुरक्षा, निवास, आदि कारणों से एक स्थान से दूसरे स्थान जाते रहे हैं। बसने के उद्देश्य से लोगों का इस प्रकार एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर संचरण सामान्यतः पलायन कहलाता है, जो कि एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है। कहा जाता है कि देश के विकास की पहली सीढ़ी गांव से होकर गुजरती है क्योंकि अगर गांव विकास के पथ पर अग्रसर होंगे तो देश तरक्की के मार्ग पर प्रशस्त होगा। परन्तु पलायन के कारण विकास की बातें बस सुनाई जाती हैं, जबकि धरातल में गांव के गांव खाली हो चुके हैं। गांव में बुनियादी सुविधाओं में कमी पलायन का एक मुख्य कारण है। गांवों में रोजगार और शिक्षा के साथ–साथ बिजली, आवास, सड़क, संचार, स्वच्छता जैसी बुनियादी सुविधाएं शहरों की तुलना में बेहद निम्न है। शोध–पत्र में यह विश्लेषित किया गया है कि वर्तमान समय में ग्रामों में पलायन की स्थिति क्या है? पलायन होने का मुख्य कारण उत्तराखण्ड के ग्रामीण इलाकों में निवासरत् लोगों द्वारा किसे माना जा रहा है? इसी क्रम में यह भी जानने का प्रयास किया गया है कि उच्च शिक्षा की व्यवस्था न होना भी पलायन का एक महत्वपूर्ण कारण है। साथ ही साथ महिला सशक्तीकरण को बढ़ावा देते हुए वर्तमान ग्रामीण परिवेश में महिलाओं का रोजगार के प्रति रूचि बढ़ना भी एक मुख्य कारण के रूप में पलायन को और अधिक प्रबल रूप देने में सहायक है।

मूल शब्द– *ग्राम, पलायन*

प्रस्तावना

ग्रामीण समाज में यदि परिवर्तन के विषय में अध्ययन करना हो तो एक विस्तृत क्षेत्र अध्ययन हेतु प्राप्त हो जाता है, पलायन। पलायन वर्तमान समाज की एक सबसे बड़ी समस्या का रूप धारण करने लगा है और भारतीय ग्राम भी इस समस्या से अछूते नहीं है। पलायन सामाजिक जीवन का एक हिस्सा सा बनता जा रहा है जिसका रूप दिनोंदिन परिवर्तित हो रहा है। **योगेश अटल** ने अपनी पुस्तक **चेन्जिंग इण्डियन सोसाइटी** में ग्रामीण स्वरूप में परिवर्तन के सम्बन्ध में कहा है कि `भारत में परम्परा व आधुनिकता साथ–साथ चल रही है। लोग व्यवसायों एवं रोजगार के लिए गांवों से शहरों में आकर रहने लगे हैं, जिससे उनके परिवार व्यवस्था में भी परिवर्तन आया है।'' भारत की बात की जाए तो सम्पूर्ण भारत में यह प्रक्रिया गतिमान है। व्यक्ति रोजगार, शिक्षा, जीवन जीने के ढंगों को बदलने, अच्छी स्वास्थ्य सुविधाओं, परिवहन के अच्छे साधनों तथा एक सुगम दिनचर्या बनाने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान को पलायन कर रहा है। पलायन के स्वरूप में नगरों से महानगरों की ओर पलायन, नगरों से नगरों की ओर पलायन, ग्राम से नगरों की ओर पलायन, ग्राम से कस्बों की ओर पलायन आदि स्थितियां देखी जा रही है। इस प्रक्रिया में सभी क्षेत्रों में परिवर्तन होना स्वाभाविक है। परन्तु इस सारी प्रक्रिया में प्रभावित सबसे छोटा क्षेत्र

हमारे ग्राम है। जिनमें पलायन की स्थिति काफी गम्भीर है। युवा वर्ग पलायन कर अधिक संख्या में ग्रामों से नगरों में बस गये हैं। **सुभाष सेतिया** ने **''गांव से पलायन कारण और निवारण''** नामक अपने अध्ययन में यह बताने का प्रयास किया कि गांव में रोजगार की अपर्याप्तता शहरों की ओर पलायन के प्रमुख कारणों में से एक है। शिक्षा का विस्तार होने से गांव के शिक्षित युवकों के लिए देहात में कामकाज के कोई अवसर न होने के कारण वे शहर की ओर उन्मुख करने लगे। रोजगार और शिक्षा जैसी आवश्यकताओं की कमी के अलावा गांव में बिजली, चिकित्सा, सड़क, संचार जैसी अनेक सुविधाओं के अभाव के कारण ग्रामीणजन शहरों की ओर उन्मुख होने लगे।

उत्तराखण्ड की बात की जाए तो यहाँ के पर्वतीय जिलों में पलायन एक बड़ी समस्या रही है। उत्तराखण्ड में पलायन की स्थिति और भी चिन्ताजनक है। यहाँ बीते 10 सालों में 5 लाख लोगों ने स्थायी और अस्थायी तौर पर गांव छोड़ा है। इनमें अकेले 42 प्रतिशत ऐसे युवा शामिल हैं, जिनकी उम्र 26 से 35 साल के बीच है। ये तथ्य ग्राम्य विकास एवं पलायन आयोग उत्तराखण्ड द्वारा ग्राम पंचायतों में कराए गए सर्वे में सामने आए हैं, जिन्हें अर्थ एवं संख्या निदेशालय के आर्थिक सर्वेक्षण 2021–22 में शामिल किया गया है। आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार, ग्राम पंचायतों में मुख्य व्यवसाय आज भी कृषि और मजदूरी ही है। **राजशेखर भट्ट** ने अपने शोध रिपोर्ट **'पलायन की पीड़ा का दंश'** में बताया कि 14 प्रतिशत ग्रामीणों के विपरीत 86 प्रतिशत ग्रामीणों ने आधुनिकीकरण व औद्योगीकरण को प्रवास का कारण माना है। यदि आधुनिकीकरण की बात करें तो लोग अलग तौर तरीकों से जीवन यापन करना चाहते हैं, जिस कारण संयुक्त परिवार का विघटन हो रहा है। प्रवास तथा आधुनिकीकरण के कारण सांस्कृतिक प्रतिमानों में कमी आ रही है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि आधुनिकीकरण के कुछ तत्व प्रवास के कारण ग्रामीण समाज में पहुँचने से ग्रामीण संरचना और रीति–रिवाजों में परिवर्तन हुआ है। प्रदेश के पहाड़ी जिलों के निवासी पलायन की पीड़ा का दंश झेलने को मजबूर हैं। उत्तराखण्ड राज्य के भी अधिकांश ग्राम पलायन की मार झेल रहे हैं। ग्रामों में मात्र वृद्ध तथा महिलाएं ही अधिक संख्या में देखे जा रहे हैं बच्चे तथा पुरूष शिक्षा तथा रोजगार के लिए शहरों में रहने को मजबूर हैं। इस पलायन से ग्रामीण समाज में कई परिवर्तन दृष्टिगोचर होते है। पलायन ग्रामों तथा नगरों के मध्य संक्रमण की स्थिति को बनाने का एक महत्वपूर्ण कारण माना जा सकता है। संक्रमण की इस स्थिति में ग्रामीण व्यक्ति का नगरों के सम्पर्क में आना तथा नगरों के व्यक्तियों का ग्रामीणों के सम्पर्क में आना परिवर्तन लाने का एक महत्वपूर्ण कारक है। इस शोध पत्र में उत्तराखण्ड के ग्रामों में हो रहे पलायन तथा पलायन के कारणों के सन्दर्भ में प्राथमिक जानकारियां एकत्रित करके ग्रामों की स्थिति का अध्ययन किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र एवं निदर्श

प्रस्तुत शोध पत्र रानीखेत तहसील के अन्तर्गत ताड़ीखेत विकासखण्ड के ग्रामों से हो रहे पलायन के समाजशास्त्रीय विश्लेषण पर आधारित है। उत्तराखण्ड राज्य दो मण्डलों (गढ़वाल मण्डल तथा कुमाँऊ मण्डल) में विभक्त है। वर्तमान समय में उत्तराखण्ड राज्य में कुल 13 जनपद है, जिनमें से 7 जनपद गढ़वाल मण्डल तथा 6 जनपद कुमाँऊ मण्डल में स्थित है। शोधार्थी का अध्ययन क्षेत्र रानीखेत तहसील का ताड़ीखेत विकासखण्ड कुमाँऊ मण्डल के जनपद अल्मोड़ा के अन्तर्गत आता है। इस विकासखण्ड के अन्तर्गत कुल 130 ग्राम पंचायतें हैं। इन 130 ग्राम पंचायतों में से 06 ग्राम पंचायत का चयन किया गया है। चयनित कुल 06 ग्राम पंचायतों में से 237 उत्तरदाताओं से अध्ययन हेतु प्रतिभाग करवाया गया है।

शोध अभिकल्प एवं पद्धितिशास्त्र

किसी भी कार्य को एक निश्चित दिशा में करने के लिए शोध प्रारूप का निर्माण किया जाता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में अन्वेषणात्मक–विवरणात्मक शोध अभिकल्प का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के अन्तर्गत शोधार्थी द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया है कि औद्योगीकरण, नगरीकरण के कारण ग्रामों में पलायन की स्थिति का स्वरूप क्या है। पलायन होने के क्या मुख्य कारण सामने आये हैं। प्रस्तुत शोध पत्र के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

1. ग्रामों में पलायन की स्थिति का अध्ययन करना।
2. पलायन के मुख्य कारणों के विषय में ग्रामीणों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
3. उच्च शिक्षा हेतु उचित व्यवस्था ग्रामों में न होना पलायन का कारण है इस तथ्य पर ग्रामीणों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
4. महिलाओं का रोजगार के प्रति रूचि बढ़ना भी पलायन में सहायक है इस दृष्टिकोण का अध्ययन करना।

शोध उपकरण

शोध में प्राथमिक तथ्यों के संकलन हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है। अतः प्रस्तुत शोध पत्र मूलतः प्राथमिक आंकड़ों पर आधारित है, जिसमें आवश्यकता व उपयोगिता के आधार पर द्वितीयक आंकड़ों का भी उपयोग किया गया है। प्राथमिक आंकड़ें मूलरूप से साक्षात्कार अनुसूची के द्वारा एकत्रित किये गये हैं। इन्टरनेट, लाइब्रेरी, समाचार पत्रों, पुस्तकों तथा असहभागी अवलोकन पद्वति का प्रयोग द्वितीयक आंकड़ों के रूप में किया गया है। अध्ययन इकाई के रूप में प्रत्येक परिवार के मुखिया का चयन उत्तरदाता के रूप में किया गया है।

तथ्य विश्लेषण

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु संकलित तथ्यों के आधार पर निम्नलिखित तथ्यों को उद्घाटित किया गया है।

पलायन की स्थिति पर उत्तरदाताओं की राय

पलायन आयोग की रिपोर्ट में कहा गया है कि अलग राज्य बनने के बाद उत्तराखण्ड से करीब 60 प्रतिशत आबादी यानी 32 लाख लोग अपना घर छोड़ चुके हैं। पलायन आयोग की रिपोर्ट कहती है कि 2018 में उत्तराखण्ड के 1700 गांव भुतहा हो चुके हैं, जबकि करीब एक हजार गांव ऐसे हैं जहाँ सौ से कम लोग बचे हैं। कुल मिलाकर 3900 गांवों से पलायन हुआ है। ग्राम्य विकास एवं पलायन आयोग की रिपोर्ट के अनुसार 3946 ग्राम पंचायतों को स्थायी पलायन की श्रेणी में रखा गया है। इन सभी ग्राम पंचायतों से 1 लाख 18 हजार 981 लोगों ने पलायन किया है। ये लोग गांव की अपनी पुस्तैनी जमीन बेचकर घरों में ताले लटकाकर गये ओर फिर कभी वापस नहीं आए।

तालिका 1

पलायन की स्थिति पर उत्तरदाताओं की राय

क्रम संख्या	पलायन की स्थिति	आवृत्ति	प्रतिशत
1	पलायन हुआ है	222	93.67
2	पलायन नहीं हुआ है	04	01.68
3	बहुत कम हुआ है	11	04.65
	योग	**237**	**100.00**

उपरोक्त तालिका संख्या 1 के विश्लेषण से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश उत्तरदाता इस पक्ष में है कि ग्रामों से पलायन हुआ है। 93.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कथन है कि पलायन हुआ है। 1.68 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे है जिनका कहना है कि पलायन नहीं हुआ है। 04.65 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि पलायन हुआ तो है लेकिन कम हुआ है। सर्वाधिक 222 उत्तरदाताओं का मानना है कि पलायन हुआ है।

पलायन के मुख्य कारणों के विचार पर उत्तरदाताओं की राय

गांव से शहरों की ओर पलायन का सिलसिला कई समय से चलता आ रहा है। गांवों में कृषि भूमि के लगातार कम होते जाने, आबादी बढ़ने और प्राकृतिक आपदाओं के चलते रोजी–रोटी की तलाश में ग्रामीणों को शहरों–कस्बों की ओर मुंह करना पड़ा। गांवों में बुनियादी सुविधाओं की कमी भी पलायन का एक दूसरा बड़ा कारण है। गांवों में रोजगार और शिक्षा के साथ–साथ बिजली, आवास, सड़क, संचार, स्वच्छता जैसी बुनियादी सुविधाएं शहरों की तुलना में बेहद कम है। इन बुनियादी कमियों के साथ–साथ गांवों में भेदभावपूर्ण सामाजिक व्यवस्था के चलते शोषण और उत्पीड़न से तंग आकर भी बहुत से व्यक्ति शहरों की ओर पलायन कर रहे है।

तालिका 2

पलायन के मुख्य कारणों के विचार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

क्रम संख्या	पलायन का मुख्य कारण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	शिक्षा सुविधाओं में कमी	43	18.13
2	रोजगार के कम अवसर	166	70.00
3	यातायात के साधनों में कमी	08	03.38
4	प्राथमिक सुविधाओं में कमी	08	03.38
5	नगरीय जीवन की ओर आकर्षण	12	05.11
	योग	**237**	**100.00**

उपरोक्त तालिका संख्या 2 से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर जो तथ्य सामने आये उनमें 237 उत्तरदाताओं की राय जानने का प्रयास किया गया है। प्राप्त आंकड़ें बताते हैं कि 43 उत्तरदाताओं का कहना है कि शिक्षा सुविधाओं की ग्रामीण क्षेत्र में कमी के कारण पलायन किया जा रहा है। सर्वाधिक 166 उत्तरदाताओं के अनुसार रोजगार न होने के कारण लोग ग्रामों को छोड़कर शहरों का रूख करने लगे हैं। 08 उत्तरदाताओं के अनुसार यातायात की कमी के कारण लोग गांवों से शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। 08 उत्तरदाता मानते हैं कि जीवन यापन करने हेतु अवश्यक प्राथमिक सुविधाओं की कमी होना पलायन का कारण है तथा 12 उत्तरदाताओं के लिए नगरीय जीवन की ओर बढ़ता आकर्षण पलायन का कारण है।

तालिका 3

उच्च शिक्षा हेतु उचित व्यवस्था का विवरण

क्रम संख्या	उच्च शिक्षा हेतु उचित व्यवस्था	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	00	00.00
2	नहीं	237	100.00
	योग	**237**	**100.00**

तालिका संख्या 3 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अध्ययन क्षेत्र में परिवर्तन की स्थिति तो बनी हुई है परन्तु यह परिवर्तन उच्च शिक्षा सुविधाओं को नहीं दर्शाता है। यहाँ पर प्राप्त आंकड़ों से ज्ञात होता है कि 100 प्रतिशत उत्तरदाताओ के अनुसार उच्च शिक्षा ग्रहण करने हेतु कोई भी सुविधा वर्तमान समय तक उपलब्ध नहीं हो पाई है। उच्च शिक्षा हेतु ग्रामीण समाज को नज़रअन्दाज़ न करते हुए उच्च शिक्षा की व्यवस्था न होने पर भी पलायन करना ग्रामीण युवा के लिए एक महत्वपूर्ण कदम माना जा सकता है।

तालिका 4

महिलाओं के रोजगार के पक्ष में उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

क्रम संख्या	महिलाओं को रोजगार करना चाहिए	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	230	97.00
2	नहीं	07	03.00
	योग	**237**	**100.00**

उपरोक्त तालिका संख्या 5 में उत्तरदाताओं से प्राप्त सूचना के आधार पर जो आंकड़ें प्राप्त हुए हैं उस आधार पर कहा जा सकता है कि 97 प्रतिशत उत्तरदातओं का मानना है कि महिलाओं को रोजगार करना चाहिए। परन्तु 03 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं जिनकी राय है कि महिलाओं को रोजगार नहीं करना चाहिए।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्याय में ग्रामों से हो रहे पलायन तथा पलायन के कारणों को जानने का प्रयास किया गया है। इस क्रम में सर्वप्रथम अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाताओं से पलायन की स्थिति जानने पर ज्ञात हुआ कि 93.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा बताया गया कि उनके ग्रामों में पलायन हुआ है। पलायन होने के ग्रामीण क्षेत्रों में कई कारण देखे गये हैं। जिनमें शिक्षा सुविधाओं की कमी, रोजगार के कम अवसर, यातायात के साधनों की कमी तथा नगरीय जीवन की ओर आकर्षण, प्राथमिक स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी मुख्य कारण है। सर्वाधिक 70 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने पलायन का मुख्य कारण रोजगार के अवसरों का कम होना माना है। 100 प्रतिशत उत्तरदाताओ के अनुसार उच्च शिक्षा ग्रहण करने हेतु कोई भी सुविधा वर्तमान समय तक उपलब्ध नहीं हो पाई है। उच्च शिक्षा हेतु ग्रामीण समाज को नज़रअन्दाज़ न करते हुए उच्च शिक्षा की व्यवस्था न होने पर भी पलायन करना ग्रामीण युवा के लिए एक महत्वपूर्ण कदम माना जा सकता है। साथ ही साथ महिलाओं की रोजगार की ओर रूचि बढ़ना भी पलायन के एक मुख्य कारण के रूप में देखा जा सकता है। अध्ययन क्षेत्र में 97 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि महिलाओं का रोजगार करना भी पलायन के लिए एक कारक है तथा 03 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा नहीं मानते।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अटल, योगेश, चेन्जिंग इण्डियन सोसाइटी, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, पृ0 135, 2006।
2. सेतिया, सुभाष, ''गांवों से पलायन, कारण और निवारण'', कुरूक्षेत्र, दिसम्बर, ग्रामीण विकास मंत्रालय, नई दिल्ली, 2010
3. www.livehindustan.com.
4. भट्ट, राजशेखर, 'पलायन की पीड़ा का दंश,' अप्रकाशित शोध पत्र, कुमांऊ विश्वविद्यालय, नैनीताल, 2015।